# युवाओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व का उनके समायोजन पर प्रभाव : एक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
के
शिक्षा संकाय के अंतर्गत
पीएच० डी० हेतु प्रस्तुत

## शोध प्रस्ताव


**पर्यवेक्षिका**

Shahina Mateen
डॉ० शाहीना मतीन
असिस्टेंट प्रोफेसर
मिथिला बी० एड० कॉलेज
दरभंगा

**शोधार्थी**

Neelam Kumari
नीलम कुमारी
क्रमांक -22060273, (18)
पैट – 2021- 22


CamScanner

## प्रस्तावना

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 35 प्रतिशत युवा वर्ग है एवं उनके भविष्य का निर्माण राष्ट्र का निर्माण होगा। युवा वर्ग का भविष्य पूर्ण रूप से उनके शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास पर ही निर्भर करता है। व्यक्तित्व विकास के लिए उपयुक्त शिक्षा के साथ मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से भी सुदृढ़ होना भी आवश्यक है। व्यक्ति विशेषकर युवा वर्ग अपने व्यक्तित्व को तभी विकसित कर सकता है जब वह संवेगात्मक रूप में मजबूत हों। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई व्यक्ति उस समय संवेगात्मक रूप से स्वस्थ माना जाता है जब वह पूर्णरूप अपने व्यक्तिगत कार्यों के साथ सामाजिक सहभागिता पर भी ध्यान दें। सामाजिक सहभागिता व्यक्ति को अपने कार्यक्षेत्र एवं पारिवारिक वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में भी सहायक होता है। व्यक्ति का भावात्मक व्यवहार केवल उसकी शारीरिक वृद्धि और विकास को ही नहीं प्रभावित करती बल्कि बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं सौन्दर्यात्मक विकास पर भी प्रभाव डालती है। विभिन्न शोध से यह ज्ञात होता है कि उच्च भावात्मक बुद्धि वाले छात्र विद्यालय में कम भावात्मक बुद्धि वाले छात्र से बेहतर प्रदर्शन करते हैं एवं इनका समाज और विद्यालय में बेहतर समायोजन होता है। युवा वर्ग हमारे देश की रीढ़ है। उनके व्यक्तित्व विकास, संवेगात्मक बुद्धि का विकास तथा वर्तमान युग के अनुसार उनकी प्रतिभा का प्रयोग कर उनके आत्म-सम्मान को बढ़ाना ताकि वह समाज में अनुकूल सा,सामंजस्य स्थापित कर सकें, यह सभी हमारी जिम्मेदारी है। यह सम्पूर्ण राष्ट्र की जिम्मेदारी है कि वह युवाओं के संवेगात्मक बुद्धि का धनात्मक प्रयोग कर उसके व्यक्तित्व के विकास में अहम भूमिका अदा करें।

## संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक विकास मानव के विकास के क्रम का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। प्रेम, क्रोध, भय, घृणा आदि भाव युवाओं के व्यक्तित्व और विकास में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार केवल उसकी शारीरिक वृद्धि और विकास को ही नहीं प्रभावित करती बल्कि बौद्धिक, सामाजिक,नैतिक एवं सौन्दर्यात्मक विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व के दूसरे पहलू को भी समान से प्रभावित करता है। अतः युवाओं के विकास के विभिन्न आयामों के साथ-साथ संवेगात्मक पहलू पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अगर अवलोकन किया जाये तो संवेगात्मक बुद्धि पद का प्रयोग



Shahina Mateen.

Neelam Kumari

1990 में सबसे पहले दो अमेरिकन प्रोफेसरों डॉ० जॉन मेयर तथा डॉ० पीटर सेलोवे द्वारा ऐसा मापन तैयार करने हेतु किया गया था जिसे लोगों की संवेगात्मक क्षेत्र में विद्यमान योग्यताओं में विभेदीकरण किया जा सके। परन्तु जिस रूप में हम आज संवेगात्मक बुद्धि पद का प्रयोग करते है उसे इस तरह लोकप्रिय बनाने का श्रेय केवल एक मात्र अमेरिकन वैज्ञानिक डेनियल गोलमैन को ही जाता है। उन्होंने 1995 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "Emotional Intelligence: Why it can matter more than I.Q." के माध्यम से इसे विशेष चर्चा का विषय बनाया। प्रोफेसर डॉ० जॉन मेयर तथा डॉ० पीटर सेलोवे के अनुसार "संवेगात्मक बुद्धि को एक ऐसी क्षमता के रूप परिभाषित किया जा सकता है जिससे चार विभिन्न रूपों में संवेगों को उचित दिशा देने में मदद मिले जैसे संवेग विशेष प्रत्यक्षीकरण करना, अपनी विचार प्रक्रिया में समन्वय करना, उसे समझना तथा उसका प्रबंधन करना।" येटा लेंतेंशगर के अनुसार संवेगात्मक से रूप से बुद्धिमान होने हेतु मैं यह कहता हूँ कि आप संवेगात्मक बुद्धि से सम्बंधित चार क्षेत्रों (संवेगों से अवगत होना, उन्हें स्वीकारना, उनके प्रति सही दृष्टिकोण या अभिवृत्ति रखना तथा उनके प्रति उचित अनुक्रिया करना) में निपुणता अर्जित करें।

दोनों परिभाषाओं के आधार पर हम संवेगात्मक बुद्धि को इस प्रकार परिभाषित कर सकते है कि इससे तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता (सामान्य बुद्धि से सम्बंधित होते हुए भी अपने आप में स्वतंत्र) से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के भाव को जानने, समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्त करने कराने में इस प्रकार मदद करें कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियायें कर सके जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अच्छे अवसर प्राप्त हो सकें।

### व्यक्तित्व

किसी के व्यक्तित्व को उसके वाह्य रूप से तथा आकृति अथवा चरित्र और वाह्य व्यवहार से आकलन करना पूर्ण रूप से गलत अवधारणा है। किसी भी अवस्था में व्यक्तित्व को इनमें से किसी एक या इकट्ठे रूप में जाना या समझा नहीं जा सकता है। मनोवैज्ञानिक भाषा में व्यक्ति अपने आप में जो कुछ भी है वहीं उसका व्यक्तित्व है। अपने प्रति और दूसरों के प्रति किये जाने वाले व्यवहार का एक समग्र चित्र है। इसमें व्यक्ति के पास शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक और अध्यात्मिक रूप से जो कुछ भी होता है वह



Shahina Mateen.

Neelam Kumari

CamScanner

सभी सम्मिलित होता है। थोड़े शब्दों में व्यक्तित्व वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति के पास होता है। G. W. Allport (1948) के अनुसार व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है। H. J. Eysenck (1971) के अनुसार व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि और शारीरिक बनावट का थोड़ा-बहुत ऐसा स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।

ऑलपोर्ट ने अपनी परिभाषा कुल 49 परिभाषाओं कि समीक्षा के बाद प्रस्तुत किया था। अतः उपरोक्त परिभाषा से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि व्यक्तित्व को व्यक्ति के उन सभी गुणों एवं विशेषताओं से युक्त ऐसे गतिशील परन्तु बहुत कुछ सीमाओं तक स्थायी संगठन एवं संरचना की संज्ञा दी जा सकती है जिससे व्यक्ति को अपने आप में अपूर्व बनकर अपने वातावरण के साथ समायोजित रहने में सहायता मिलती है।

### समायोजन

हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है। युवावस्था से हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढ़ंग से जीवन संग्राम की इस लड़ाई में को लड़ता है वह उतने ही अच्छे रूप से सफलता से प्रगति करता है। मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में बहुत कुछ चाहते है और यही चाह पल-पल संघर्ष करने को प्रेरित करती है। परन्तु बहुत बार ऐसा भी होता है कि जो हम चाहते है जिसके लिए हम दिन-रात परिश्रम करते है उस उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हो पाती है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद दूसरे क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य की ऊँचाई को अपनी योग्यता और परिस्थिति के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के संशोधित एवं परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाति है। एल० एस० शेफर के अनुसार समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से सम्बंधित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखना। गेट्स, जेरसिल्ड एवं अन्य के अनुसार समायोजन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जिसके द्वार एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।



Shahina Mateen

Neelam Kumari

CamScanner

उपरोक्त परिभाषा के अनुसार हम कह सकते है कि समायोजन एक प्रक्रिया है, एक ऐसा साधन जिसके द्वारा सुखी एवं संतोषप्रद जीवनयापन की राह पकड़ी जा सकती है। यह हमें मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छी तरह जीने के लिए उसी रूप में आवश्यक है बदलते मौसम या हालत में शरीर के लिए वस्त्रों, खान-पान, रहन-सहन में परिवर्तन लाकर अनुकूलन करने की प्रक्रिया समायोजन सम्बन्धी गुण, परिस्थितियों के अनुसार हमें अपने आपको ढालने में पूरी सहायता करता है।

**व्यक्तित्व, संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन में संबंध**

समायोजन एवं व्यक्तित्व का घनिष्ठ सम्बन्ध है। व्यक्तित्व के प्रत्येक परिभाषा में समायोजन एक स्थान रखता है। व्यक्तित्व का निर्धारण ही समायोजन से होता है। समायोजन किसी व्यक्ति का विशेष गुण होता है जिस से वह समाज में अपने आप को अनुकूल बनाने में सहायता प्राप्त करता है। किसी व्यक्ति का अपने वातावरण में पूर्णतः समायोजित होने के लिए उसे अपने भावना को नियंत्रित करने की आवश्यक होती है। भावना को नियंत्रित करने का तात्पर्य यह है वह व्यक्ति संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान हो। आज के युग में बुद्धिमान होने से अधिक आवश्यक यह है कि वह संवेगात्मक रूप से अधिक प्रभावशाली एवं मजबूत हो तभी वह अपने कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न कर पायेगा।

**अध्ययन का महत्व**

वर्तमान समय में किसी भी व्यक्ति की सफलता इस तथ्य पर अधिक निर्भर करती है कि वह संवेगात्मक तौर कितना मजबूत है तथा उसका व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है। संवेगात्मक बुद्धि और व्यक्तित्व का समायोजन के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिस व्यक्ति में संवेगात्मक क्षमता संतुलित और व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है वह अधिक समायोजित एवं सफल होता है। किसी व्यक्ति की सफलता 80 प्रतिशत उसकी संवेगात्मक बुद्धि पर निर्भर करती है जबकि सामान्य बुद्धि की भूमिका केवल 20 प्रतिशत होती है। उसी प्रकार कार्यक्षेत्र में सफलता व्यक्ति के समायोजन क्षमता पर निर्भर करती है एवं साथ ही साथ व्यक्तित्व के शीलगुणों की भी भूमिका होती है। समायोजन किसी व्यक्ति का विशेष गुण होता है जिस से वह कार्यक्षेत्र, समाज एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों भी में अपने आप को अनुकूल बनाने में सहायता प्राप्त करता है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके युवा वर्ग के हाथों में होता है। युवा वर्ग का भविष्य पूर्ण रूप से उनके शिक्षा एवं



Shahina Mateen.

Neelam Kumari

व्यक्तित्व विकास पर ही निर्भर करता है। व्यक्तित्व विकास के लिए उपयुक्त शिक्षा के साथ मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से भी सुदृढ़ होना भी आवश्यक है।

शोधार्थी युवाओं के व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है। भले ही उनका व्यक्तित्व बहुत अधिक प्रभावशाली ना हो लेकिन यदि उनके पास एक मजबूत भावात्मक बुद्धि सम्पदा है तो उनके प्रदर्शन के स्तर में सुधर लाया जा सकता है। इस तरह से यह अध्ययन युवाओं के भावात्मक बुद्धि एवं उनके व्यक्तित्व से सम्बंधित है जिससे उनके व्यक्तित्व विकास एव प्रत्येक क्षेत्र में सामंजस्य स्थापित करने सहायता प्रदान कर सकेगा।

**सम्बंधित साहित्य का अध्ययन**

**सिन्हा, रश्मि एवं रॉय, बबली (2013)** ने अपने अनुसंधान किशोरावस्था में संवेगात्मक बुद्धि एवं उपलब्धि प्रेरणा: एक सम्बन्धात्मक अध्ययन में यह पाया कि संवेगात्मक बुद्धि एवं उपलब्धि प्रेरणा में एक धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया। इस अध्ययन में शोधार्थी ने पटना जिला के 12वीं के छात्रों को शामिल किया था। इस शोध में यह भी ज्ञात किया कि विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक उपलब्धि वाले छात्रों का संवेगात्मक बुद्धि भी अलग-अलग पाया गया।

**अब्दुल्लाह, इलियास ,मह्युद्दीन एवं अली (2010)** ने मलेशिया पब्लिक यूनिवर्सिटी के प्रथम वर्ष के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के मध्य सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया था जिसमें प्रतिदर्श के तौर पर 250 छात्रों को शामिल किया था। इस अध्ययन में यह परिणाम दर्शाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के मध्य एक धनात्मक सह-सम्बन्ध है एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि और समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

**कौर और मीनाक्षी (2010)** ने विद्यालय के किशोर एवं माताओं की कार्य की प्रकृति के सामाजिक और संवेगात्मक बुद्धि पर एक अध्ययन किया जिसमें 100 छात्रों पर किये गए अनुसंधान से यह ज्ञात हुआ कि कार्यरत माता के बच्चों का संवेगात्मक बुद्धि, अकार्यरत माताओं के बच्चों से अधिक है तथा लड़कियों की सामाजिक बुद्धि लड़कों से अधिक है। इस अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि कार्यरत माता के बच्चों के



Shahina Mateen.

Neelam Kumari

CamScanner

सामाजिक एवं संवेगात्मक बुद्धि में एक धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है जबकि अकार्यरत माताओं के बच्चों में सामाजिक एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य ऐसा सम्बन्ध नहीं पाया जाता है।

पांडा, एस० के०, (2009) ने छात्र-अध्यापक के व्यक्तित्व-शीलगुणों एवं भावात्मक बुद्धि पर एक अनुसंधान किया जिसमें यह ज्ञात हुआ के सामान्य व्यवहार वाले छात्र की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है एवं लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया जाता है।

**शोध समस्या का कथन**

**"युवाओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व का उनके समायोजन पर प्रभाव : एक अध्ययन"**

**संक्रियात्मक परिभाषा**

संवेगात्मक बुद्धि :- भावात्मक बुद्धि से आशय है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी भावनाओं को तथा दूसरे की भावनाओं को समझता है एवं उसके फलस्वरूप अपने व्यवहार को प्रदर्शित करता है।

व्यक्तित्व :- व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते है कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा।

समायोजन :- समायोजन से तात्पर्य यह है कि वातावरण के अनुसार व्यक्ति अपने आप में परिवर्तन कर के उस वातावरण के लिए तैयार होना।

**शोध-उद्देश्य**

i. युवाओं के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
ii. युवाओं में समायोजन का अध्ययन करना।
iii. युवाओं के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
iv. युवाओं के व्यक्तित्व का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
v. युवाओं के संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।



Shahina Mateen.

Neelam Kumari

CamScanner

**शोध परिकल्पना**

शोध उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सम्बंधित साहित्य के अध्ययन एवं अपने पूर्व अनुभव और पूर्व अवलोकन के आधार पर शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शोध परिकल्पना का निर्माण किया गया :

i. युवाओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन में सकारात्मक सह-सम्बन्ध होगा।
ii. युवाओं के व्यक्तित्व एवं समायोजन में सकारात्मक सह-सम्बन्ध होगा।
iii. युवाओं के विभिन्न व्यक्तित्व शीलगुणों एवं संवेगात्मक बुद्धि में सकारात्मक सह-सम्बन्ध होगा।
iv. लिंग के आधार पर युवाओं के समायोजन में सार्थक अंतर होगा।
v. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले युवाओं के समायोजन में सार्थक अंतर होगा।

**शोध विधि:-** शोधार्थी द्वारा युवाओं के व्यक्तित्व, संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि (Survey Method) का प्रयोग किया जायेगा।

**शोध जनसंख्या:-** इस अध्ययन के लिए दरभंगा एवं मधुबनी जिला के युवा वर्ग को जनसंख्या के रूप में शामिल किया जायेगा।

**प्रतिदर्श :-** शोधार्थी द्वारा इस अध्ययन के लिए यादृच्छिक विधि (Random) से दरभंगा एवं मधुबनी जिला के महाविद्यालयों के 500 युवाओं को अपने शोध में सम्मिलित किया जायेगा जिसमें पुरुष एवं महिला की संख्या क्रमशः 250 एवं 250 होगी ।

**शोध उपकरण:-** शोध-उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्नलिखित शोध-उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।

i. व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए "The Big Five Personality Scale" जिसे जॉन एवं श्रीवास्तव (1999) द्वारा विकसित किया गया है। इस स्केल में कुल पांच विमाओं में 44 पद हैं।
ii. भावात्मक बुद्धि के अध्ययन के लिए डॉ. शीला प्रसाद (2009) द्वारा निर्मित "संवेगात्मक बुद्धि परिसूची" का प्रयोग किया जायेगा। इस परिसुची में कुल 40 पद हैं।



Shahina Mateen

Neelam Kumari

CamScanner

iii. संयोजन के अध्ययन के लिए "Youth's Adjustment Scale" जिसे तोमर (प्रमोद) द्वारा तैयार किया गया है, का प्रयोग किया जायेगा। इस परिसुची में कुल 40 पद हैं।

iv. व्यक्तिगत सुचना परिसुची

**सांख्यिकी प्रविधि:-** शोध परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधि के प्रयोग से आंकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा :

i. केन्द्रीय प्रवृत्ति माप

ii. मानक विचलन

iii. टी-परीक्षण

iv. सह-सम्बन्ध

v. Regression Analysis

vi. ANOVA

**अध्यायकरण :**

**i. प्रस्तावना**

**ii. सम्बंधित साहित्य का अध्ययन**

**iii. शोध विधि**

**iv. आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम**

**v. सारांश और निष्कर्ष**

टिपण्णी : शोध अध्ययन के दौरान आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये जा सकते है।

***References:***

**Abdullah, Elias, Mahyuddin & Uli, (2010).** The Relationship between Emotional Intelligence and Adjustment among First Year Students in a Malaysian Public



Shahina Mateen.

Neelam Kumari

University, the international Journal of interdisciplinary Social Sciences, Retrieved from http://www.ijii.cgpublisher.com

**Goleman, Daniel, (1995):** Emotional intelligence: Why it can matter more than I.Q., New York: Bantam Books.

**Jersild, A.T. (1968).** in Essential of Educational Psychology, Prentice-Hall Icen.

**Kaur & Meenakshi, (2010).** Social and Emotional of School going Adolescence and working Status of Mother, Journal of Community Guidance and Research, Vol. 27, No. 3, p. 2999-309.

**Mangal, S.K., (2010).** Advanced Educational Psychology, PHI Learning, Private Limited, New Delhi.

**Mundada, Khalane. (2013).** Fundamental of Psychology, 1st Edition, Atlas Publication, Jalagaon.

**Panda, S, K., (2009).** Emotional intelligence and Personality Traits of Pupil-Teacher, Journal of Community Guidance and Research, Vol.26, No.2

**Salovey, Peter & Mayer, John D. (1990):** Emotional intelligence, imagination and Personality, 9, 185-211

**Shaffer., (2010).** The Psychology of Adjustment, New York: Houghton Mifflin.

**Sinha, Rashmi & Roy, Babli, (2013).** Emotional Intelligence and Academic Achievement Motivation Among Adolescents: A Relationship Study, Researchers World-Journal of Arts, Science & Commerce, http://www.researchersworld.com/vol4/issue2/Paper_18.pdf

**000**



Shahina Mateen.

Neelam Kumari